न्यायालय अनुमण्डल दण्डाधिकारी ,बुण्डू(राँची)

आदेश पत्रक

धरम सिंह महतो ..... बनाम ..... दशरथ महतो वगैरह

क्र०/तिथि	आदेश एवं पदाधिकारी का हस्ताक्षर	की गई कार्रवाई
30-11-17	अभिलेख सं0–एम.....158.../2017 धारा–107 द0प्र0सं0 थाना प्रभारी तमाड़..... के अप्राथमिकी सं0–52/17 दिनांक–7-11-17 प्रस्तुत पुलिस प्रतिवेदन/आवेदन से सूचना मिली है कि मारपीट होने का भय संबंधी विवाद होने को लेकर उभय पक्ष में तनाव है। जिससे संभावना है कि परिशांति भंग होगी या लोक परिशांति क्षुब्ध होगी या उभय पक्ष/विपक्षी कोई ऐसा असंतोषकारी कार्य करेंगे जिससे परिशांति भंग हो जाएगी या लोक परिशांति क्षुब्ध हो जाएगी। अतः मैं पायल राज, कार्यपालक दण्डाधिकारी ,बुण्डू(राँची) उक्त पुलिस प्रतिवेदन से संतुष्ट होकर उभय पक्ष/द्वितीय पक्ष के विरूद्ध द0प्र0सं0 की धारा–107 के अन्तर्गत कार्यवाही आरंभ करती हूँ। उभय पक्ष/द्वितीय पक्ष के विरूद्ध सूचना निर्गत करें कि वे कारण दर्शित करें कि उन्हें एक वर्ष तक परिशांति कायम रखने के लिए उसरो/उनसे प्रत्येक को 1000(एक हजार) रू0 का बन्ध पत्र उसी राशि के दो जमानतदारों के साथ राशि दाखिल करने हेतु आदेश क्यों नहीं दिया जाय। अभिलेख तिथि 15-12-17..... को उपस्थापित करें। लेखापित एवं संशोधित 30/11/17 कार्यपालक दण्डाधिकारी, बुण्डू। 30/11/17 कार्यपालक दण्डाधिकारी, बुण्डू।	
15-12-17	अभिलेख उपस्थापित। उभय पक्ष उपस्थित। उभय पक्ष जवाब दाखिल करे। दिनांक 05-01-18 को सुने। 15/12/17	

तिथि	आदेश एवं पदाधिकारी का हस्ताक्षर
	क्रमांक 02, 03, 04 अधिवक्ता हाजरी। प्रथम पक्ष की ओर से गवाही जनक सिंह मुण्डा से परीक्षण एवं प्रतिपरीक्षण लिया गया तथा गवाही से मुक्त किया गया। प्रथम पक्ष गवाही हेतु दिनांक 18-06-18 को रखें। 8/6/18
18-06-18	पीठासीन पदाधिकारी अन्य कार्य में व्यस्त। दिनांक 02-07-18 को रखें।
02-07-18	अभिलेख उपस्थापित। प्रथम पक्ष उपस्थित द्वितीय पक्ष क्रमांक 01 उपस्थित- उपस्थित अन्य अधिवक्ता हाजरी। उक्त वाद में 6 (छः) माह की अवधि पूर्ण हो चुकी है अर्थात वाद काल बाधित हो गया है। अतः वाद के अभिलेख की कार्यवाही बन्द की जाती है। 2/7/18

Digitally signed by AJAY KUMAR SAW
Date: 2021.08.16 13:47:04 +05:30
Location: 192.168.43.107